Heena Palheis
SKt. Deptt.
II Yr. Content

तिङ् प्रकरण – लकार समय बोधक हैं। इन्हें दो भागों में देखा गया है – ① लौकिक ② वैदिक

लौकिक के अन्तर्गत पाँच लकारों की चर्चा होती है।

① → लट् लकार – वर्त्तमान काल।
→ लृट् लकार – भविष्यत् काल।
→ लङ् लकार – भूत काल।
→ लोट् लकार – आज्ञासूचक। अनुज्ञा।
→ विधिलिङ् – लिङ् या 'चाहिए' अर्थ

② वैदिक –
→ लेट् – वर्त्तमान काल
→ लुट् – अनद्यतन भविष्य
→ लुङ् – आसन्न भूतकाल
→ लिट् – परोक्ष भूत
→ लृङ् – विधिलिङ्

सूत्रों की व्याख्या –

① वर्त्तमाने लट् – लट् लकार का प्रयोग वर्त्तमान काल के लिए होता है।
→ वर्त्तमान काल की क्रिया को बताने के लिए लट् लकार का प्रयोग होता है।
→ तिप्तस्झिसिप्थस्थमिप्वस्मस् (परस्मैपद) – तातांझ... तङ् (आत्मनेपद) – तिङ् और उनसे अन्त होनेवाला पद तिङन्त कहलाया।
यथा – √पठ् + तिप् = पठति (पठति – परस्मैपद का रूप)
– √सेव् + त – सेवते – यह आत्मनेपदी है।

② तङानावात्मनेपदम् – 'तङ्' प्रत्याहार है जिसकी आत्मनेपद संज्ञा होती है। 'शानच्' और 'कानच्' भी आत्मनेपदी हैं।

Scanned with CamScanner

→ शानच् – 'लटः शतृशानचावप्रथमा समानाधिकरणे'
→ कानच् – 'लिटः कान्ज्वा'

(3) तिङ् शित् सार्वधातुकम् – 'तिङ्' और 'शित्' (जहाँ 'श' की इत् संज्ञा होती है) की सार्वधातुक संज्ञा होती है और शेष आर्धधातुक हैं।

(4) कर्त्तरि शप् – यदि सार्वधातुक परे हो तो कर्त्ता अर्थ में 'शप्' प्रत्यय होता है।

(5) ~~सार्वधातुकयो~~ सार्वधातुकार्धधातुकयोः – यदि सार्वधातुक और आर्धधातुक के पर 'तिङ्' प्रत्यय हो तो उनका गुण और अवादेश होता है। यथा – √भू + तिप् प्रत्यय = भवति।

(6) झोऽन्तः – प्रत्यय के अवयव 'झ' के स्थान पर अन् आदेश हो जाता है। यथा – √भू + झि
→ 'तिङ् शित् सार्व०' से सार्वधातुक संज्ञा हुई
→ सार्वधातुकार्धधातुकयोः' से √भू के 'ऊ' का अवादेश – भव –
→ झोऽन्तः – से 'अन्' आदेश होकर 'भवन्ति' रूप बना।

(7) लः परस्मैपदम् – लकार के स्थान में जो आदेश होता है, वह परस्मैपद संज्ञक होता है। यथा – √पठ् के साथ तिप् प्रत्यय का प्रयोग होकर पठति रूप बना, जो परस्मैपद संज्ञक है।
परस्मैपद और आत्मनेपद में ~~प्रयुक्त~~ प्रयुक्त होने वाले 18 प्रत्यय (तिप् से महिङ् तक), ये क्रिया को बतलाने वाले प्रत्यय हैं।

Scanned with CamScanner